रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

संस्कारों और मूल्यों से कोरोना की चुनौतियों से निपटना आसानः कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित द्वि–दिवसीय वेबिनार का समापन

जबलपुर 31 मई। भारतीय संस्कृति और मूल्य इतने परिष्कृत हैं कि प्रत्येक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। समस्याओं का समाधान भारतीय संस्कृति में है। भारत वासुधैव कुटुम्बकम् के भाव को लेकर चलता है, इसलिए वो इस समय विश्व का नेतृत्व कर रहा है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। युवाशक्ति के बल पर हम इस कोरोना के खिलाफ जारी जंग जीतकर दिखायेंगे। उपरोक्त विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने रविवार को विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार के द्वितीय दिवस अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन के दौरान व्यक्त किए।

रादुविवि के हिन्दी विभाग द्वारा "कोरोना संक्रमण के संदर्भ में भारतीय प्रत्युत्तर" विषय पर आयोजित द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार के दूसरे दिन मुख्य वक्ता के रूप में शिमला विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के पूर्व कुलपति एवं वरिष्ठ आचार्य प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी ने कहा कि कोरोना काल एक त्रासदी के रूप में हमारे सामने आया है, यह तो भारतीय संस्कृति की संवेदनशीलता है कि इतनी भयावह स्थिति को भी हम हजम कर अपनी भारतीय संस्कृति के दम पर उभर रहे हैं। इस काल में दो वस्तुएं महत्वपूर्ण हैं वह यह कि एक तो हमने भौतिकतावादी संस्कृति से किनारा किया, दूसरा विपरीत परिस्थितियों में भी मानवीय संवेदनाओं का सहारा लिया और दूसरों के लिए पूरे सेवाभाव के साथ हम खड़े रहे।

भारत की ओर देख रहा है सारा विश्व–

राष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि के रूप में रोहतक विश्वविद्यालय, हरियाणा के कुलपति और हिन्दी साहित्यकार प्रो. राम सजन पाण्डेय ने कहा कि समस्या के समाधान के रूप में भारतीय प्रत्युत्तर प्राप्त करने के लिए भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति को समझना पड़ेगा। यह दुख की घड़ी भी बीत जाएगी। दिल्ली विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. कैलाश नारायण तिवारी ने कहा कि सारा विश्व भारत की ओर देख रहा है। कोरोना काल में भारत ने ही विश्व की महाशक्तियों को दवाईयां पहुंचाने का कार्य किया। अतिथियों का वाचिक स्वागत विषय प्रवर्तन हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक द्वारा किया गया। वेबिनार का संयोजन एवं संचालन डॉ. आशारानी और आभार डॉ. विपुला सिंह ने किया।